Acharya in Baudh Darshan Code No (238)

Set No. 1 Question Booklet No.

17P/276/17

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No.										

Roll No. (Write the digits in words) .... 817 .... 160.

Serial No. of OMR Answer Sheet ....

Day and Date .... (Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only ***blue/black ball-point pen*** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 30 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall ***except the Admit Card without its envelope.***
3. ***A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.***
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space provided above.
5. ***On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.***
6. ***No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Question Booklet.***
7. ***Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfairmeans.***
8. ***Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.***
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR** ***Answer Sheet*** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

Total No. of Printed Pages : 24 *[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]*

SEAL

137.

collegedunia
India's largest Student Review Platform

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

collegedunia
India's largest Student Review Platform

Acharya in Baudh Darshan code No(238)

17P/276/17

No. of Questions : 120

प्रश्नों की संख्या : 120

Time : 2 Hours — ***Full Marks : 360***

समय : 2 घण्टे — *पूर्णाङ्क : 360*

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. ***One mark will be deducted for each incorrect answer.*** **Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3** (तीन) अंकों का है। ***प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।*** प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक ***शून्य*** होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. भगवान् बुद्ध का जन्म इस स्थान में हुआ था ?

(1) देवदह (2) कपिलवस्तु (3) कोलियग्राम (4) लुम्बिनी

02. भगवान् बुद्ध का जन्म इस समय हुआ था -

(1) 620 ई. पू. (2) 580 ई.पू. (3) 480 ई.पू. (4) 483 ई.पू.

03. भगवान् बुद्ध का बचपन का नाम था -

(1) रोहगुप्त (2) देवदत्त (3) मुक्तार्थ (4) सिद्धार्थ

collegedunia.com
India's largest Student Review Platform

04. भगवान् बुद्ध के पिता का नाम था -

(1) सुप्रबुद्ध (2) रोहण (3) शुद्धोधन (4) विकाल

05. शुद्धोधन इस गणराज्य के प्रमुख थे -

(1) शाक्य (2) वैशाली (3) वृजि (4) चेदि

06. सिद्धार्थ की माता थीं -

(1) महामाया देवी (2) गौतमी प्रजापति (3) अहल्या (4) जानकी

07. सिद्धार्थ के भाई का नाम था -

(1) देवदत्त (2) मान्धाता (3) काश्यप (4) मातलि

08. सिद्धार्थ के गुरु का नाम था -

(1) कपिल (2) अराड कलाम (3) पतञ्जलि (4) गोभिल

09. भगवान् बुद्ध के समकालीन थे -

(1) कपिल (2) पराशर (3) मोग्गलि पुत्ततिस्स (4) वर्धमान महावीर

10. वर्धमान महावीर का जन्म यहाँ हुआ था -

(1) वैशाली (2) रामग्राम (3) लुम्बिनी (4) पावा

11. भगवान् बुद्ध द्वारा उपदिष्ट आर्य-सत्यों की संख्या है -

(1) चार (2) तीन (3) दो (4) आठ

12. शील, समाधि और प्रज्ञा इसके अङ्ग हैं -

(1) चतुर्थ आर्यसत्य—आर्याष्टाङ्गिक मार्ग (2) प्रथम आर्य सत्य

(3) तृतीय आर्यसत्य (4) द्वितीय आर्यसत्य

collegedunia
India's largest Student Review Platform

13. बुद्धोपदिष्ट कारणता का सिद्धान्त है –

(1) आरम्भवाद (2) विवर्तवाद (3) प्रतीत्य समुत्पाद (4) सत्कार्यवाद

14. दु:खनिवृत्ति का मार्ग पहली बार इन्होंने बताया था –

(1) महावीर (2) बुद्ध (3) बादरायण (4) शङ्कराचार्य

15. पञ्चवर्गीय भिक्षु थे बुद्ध के –

(1) प्रथम शिष्य – अनुयायी (2) सहपाठी

(3) वंशज (4) सहकर्मी

16. अभिधर्म का अर्थ है –

(1) बुद्धोपदिष्ट धर्म और दर्शन (2) आचारशास्त्र

(3) विनय (4) न्यायशास्त्र

17. दीघनिकाय में सम्मिलित है –

(1) ब्रह्मजालसुत्त (2) अग्गिसुत्त (3) सुत्तनिपात (4) थेरगाथा:

18. धम्मपद में इनका संग्रह है –

(1) बुद्धोक्त गाथायें (2) बुद्धोपदिष्ट विनय

(3) बुद्धप्रोक्त तर्कविद्या (4) बौद्ध अभिधर्ममूल

19. 'बौद्धों की गीता' इस ग्रन्थ का दूसरा प्रसिद्ध नाम है –

(1) धम्मपद (2) सुत्तनिपात (3) थेरगाथा (4) थेरीगाथा

collegedunia
India's largest Student Review Platform

20. सब्बे धम्मा दुक्खोति यदा पञ्ञाय पस्सति ।

अथ निब्बिन्दति दुक्खे एस मग्गो विसुद्धि या ।।

यह गाथा इस ग्रन्थ का अंश है –

(1) सुत्तनिपात (2) कथावत्थु (3) थेरगाथा (4) धम्मपद

21. अन्तो जटा बहिजटा जटाय जटिता पजा ।

तं तं गोतम पुच्छामि को इमं विजटये जटं ।।

यह गाथा इस ग्रन्थ से उद्धृत है –

(1) धम्मपद (2) सुत्तनिपात

(3) दीघनिकाय (4) संयुत्तनिकाय

22. सिद्धार्थ की पत्नी का नाम था –

(1) यशोधरा (2) गौतमी (3) पुण्या (4) महामाया

23. बुद्ध का परिनिर्वाण यहाँ हुआ था –

(1) पावा (2) कुसीनारा (3) लुम्बिनी (4) वैशाली

24. *पालि त्रिपिटक* के देवनागरी नालन्दा संस्करण के प्रधान सम्पादक हैं –

(1) भिक्षु जगदीश काश्यप (2) महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

(3) भदन्त आनन्द कौसल्यायन (4) नलिनाक्षदत्त

25. माध्यमिक कारिका के प्रथम सम्पादक थे –

(1) शरत् चन्द्र दास (2) राजेन्द्र लाल मित्र

(3) विधुशेखर भट्टाचार्य (4) हर प्रसाद शास्त्री

collegedunia.com
India's largest Student Review Platform

26. लङ्कावतार सूत्र के प्रथम भारतीय सम्पादक थे –

(1) म. पं. राहुल सांकृत्यायन (2) हर प्रसाद शास्त्री

(3) भिक्षु जगदीश काश्यप (4) शरत् चन्द्र दास

27. माध्यमिक कारिका और मध्यमवृत्ति के सम्पादक हैं –

(1) ला दले वाले पुसें (2) थियोडोर शेरबात्स्की

(3) पी. वी. बापट (4) रामचन्द्र पाण्डेय

28. प्रमुख महायान सूत्रों की संख्या है –

(1) नौ (09) (2) पच्चीस (25)

(3) एक सौ दस (110) (4) पन्द्रह (15)

29. प्राचीनतम प्रज्ञापारमिता है –

(1) अष्ट साहस्रिका प्रज्ञापारमिता (2) सार्धद्विसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता

(3) पञ्चविंशतिसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता (4) एकाक्षरा प्रज्ञापारमिता

30. माध्यमिक कारिका के रचयिता हैं –

(1) आर्यदेव (2) चन्द्रकीर्ति (3) बुद्धपालित (4) नागार्जुन

31. विग्रहव्यावर्तनी का विषय है –

(1) माध्यमिक मत में तर्क की निःस्वभावता

(2) योगाचार विज्ञानवाद

(3) माध्यमिक दृष्टि से तर्कशास्त्र का निरास

(4) माध्यमिक शून्यवाद

collegedunia
India's largest Student Review Platform

32. शून्यतासप्ततिकारिका के रचयिता हैं –

(1) चन्द्रकीर्ति (2) भावविवेक (3) आर्यदेव (4) नागार्जुन

33. गिलगिट मैन्युस्क्रिप्ट्स के सम्पादक हैं –

(1) नलिनाक्ष दत्त (2) राहुल सांकृत्यायन

(3) पी. वी. बापट (4) पी. एल. वैद्य

34. दरभङ्गा संस्कृत सिरीज के सम्पादक हैं –

(1) पी. एल. वैद्य (2) पी. वी. बापट (3) पी. एस. शर्मा (4) एस. रिनपोछे

35. अभिधर्मकोश के रचयिता हैं –

(1) असङ्ग (2) वसुबन्धु (3) ज्ञान श्री मित्र (4) घोषक

36. वसुबन्धु की कृतियाँ हैं –

(1) विग्रह व्यावर्तनी और युक्तिषष्टिका

(2) अभिधर्मदीप और अभिधर्मामृत

(3) अभिसमयालङ्कार और महायानसूत्रालङ्कार

(4) विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि और बोधिचित्तोत्पादनशास्त्र

37. मैत्रेयनाथ की कृति है –

(1) अभिसमयालङ्कारकारिका (2) अभिधर्मकोश

(3) विग्रहव्यावर्तनी (4) अभिधर्मामृत

collegedunia
India's largest Student Review Platform

38. सर्वदृष्टिप्रहाणाय यः सद्धर्ममदेशत् ।
अनुकम्पामुपादाय तं नमस्यामि गौतमम् ।।
यह कारिका इस ग्रन्थ से उद्धृत है —

(1) विग्रह व्यावर्तनी (2) शून्यतासप्ततिकारिका
(3) युक्ति षष्टिका (4) माध्यमिककारिका

39. असङ्ग की कृति है —

(1) योगाचारभूमि (2) बुद्धभूमिशास्त्र (3) अभिसमयालङ्कार (4) कारुचक्रतन्त्र

40. बोधिचर्यावतार के रचयिता हैं —

(1) ह्वेन साङ्ग (2) नागार्जुन (3) शान्तरक्षित (4) शान्तिदेव

41. शिक्षासमुच्चय इनकी रचना है —

(1) शान्तिदेव (2) चन्द्रकीर्ति (3) नागार्जुन (4) प्रज्ञाकरमति

42. प्रज्ञाकरमति की रचना है —

(1) बोधिरश्मिप्रदीप (2) बोधिचर्यावतारपञ्जिका
(3) बोधिपथप्रदीप (4) बोधिचित्त विवरण

43. तत्त्व संङ्ग्रह के रचयिता हैं —

(1) कमलशील (2) शान्तरक्षित (3) शान्तिदेव (4) प्रज्ञाकरमति

44. प्रमाणसमुच्चय के रचयिता हैं —

(1) दिङ्नाग (2) धर्मकीर्ति (3) असङ्ग (4) वसुबन्धु

collegedunia
India's largest Student Review Platform

45. प्रमाणवार्तिक के रचयिता हैं –

(1) प्रज्ञाकर (2) दिङ्नाग (3) धर्मकीर्ति (4) रत्नकीर्ति

46. प्रज्ञालङ्कार इनकी रचना है –

(1) धर्मकीर्ति (2) ईश्वरसेन (3) दिङ्ग (4) प्रज्ञाकरगुप्त

47. विशालामलवती इस ग्रन्थ की टीका है –

(1) प्रमाणवार्तिक (2) प्रमाणविहेठन (3) प्रमाणसमुच्चय (4) वार्तिकालङ्कार

48. वादविधान ग्रन्थ के लेखक हैं –

(1) असङ्ग (2) वसुबन्धु (3) धर्मकीर्ति (4) चन्द्रकीर्ति

49. त्रिस्वभावनिर्देश के रचयिता हैं –

(1) असङ्ग (2) मैत्रेयनाथ (3) वसुबन्धु (4) दिङ्नाग

50. विमलप्रभाटीका इस ग्रन्थ की टीका है–

(1) हेरुकतन्त्र (2) हेरुकनिधानतन्त्र (3) हेवज्रतन्त्र (4) कालचक्रतन्त्र

51. विमलप्रभा के लेखक हैं –

(1) पुण्डरीक (2) कम्बलपाद (3) हरिभद्र (4) नागसेन

52. संवृत्तिः परमार्थश्च सत्यद्वयमिदं मतम् ।
बुद्धेरगोचरस्तत्त्वं बुद्धिः संवृतिरुच्यते ॥
यह श्लोक निम्नलिखित ग्रन्थ से उद्धृत है –

(1) बोधिपथप्रदीप (2) बोधिपथक्रमपिण्डार्थ

(3) बोधिचित्तविवरण (4) बोधिचर्यावतार

collegedunia
India's largest Student Review Platform

53. सम्यङ्मृषादर्शनलब्धभावं रूपद्वयं बिभ्रति सर्वभावा: ।
सम्यग्दृशां यो विषय: स सत्यं मृषादृशां संवृतिसत्यमुक्तम् ।।
यह श्लोक निम्नलिखित ग्रन्थ से उद्धृत किया गया है –

(1) मध्यमकावतार (2) मध्यमकहृदय
(3) मध्यमकवृत्ति (4) मध्यमकार्थसङ्ग्रह

54. माध्यमिककारिका का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है –

(1) नि:स्वभावतामूलक माध्यमिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन और चातुष्कोटिक तर्कपद्धति से विपक्षी के मतों का निरसन
(2) माध्यमिक तर्कवाद की प्रतिष्ठा
(3) शून्यता सिद्धान्त का खण्डन
(4) वैभाषिक मत की स्थापना

55. अपरप्रत्ययं शान्तं प्रपञ्चैरप्रपञ्चितम् ।

निर्विकल्पमनानार्थ मेतत्तत्त्वस्य लक्षणम् ।।
यह कारिका प्रतिपादित है –

(1) शून्यवादसम्मत तत्त्व का स्वरूप (2) शाश्वतवाद
(3) उच्छेदवाद (4) निर्वाण

56. वैभाषिक - सम्मत धर्मों की संख्या है –

(1) पचहत्तर 75 (2) बहत्तर 72 (3) पैंतालीस 45 (4) तैंतालीस 43

57. वैभाषिक - सम्मत असंस्कृत धर्मों की संख्या है –

(1) 03 तीन (2) 02 दो (3) 05 पाँच (4) 04 चार

58. वैभाषिक मत में निर्वाण है –

(1) भावरूप (2) अभावरूप (3) दोनों (4) कोई नहीं

collegedunia
India's largest Student Review Platform

59. सौत्रान्तिक नाम इसलिये पड़ा कि इस सम्प्रदाय के मतावलम्बी –

(1) सूत्रान्तों को प्रमाण मानते थे

(2) विभाषाओं को प्रमाण मानते थे

(3) माध्यमिकों का खण्डन करते थे

(4) अभिधर्म का प्रतिपादन करते थे

60. न चाभावोऽपि निर्वाणं कुत एवास्य भावता ।

भावाभावपरामर्शक्षयो निर्वाणमुच्यते ॥

यह कारिका इस कृति से उद्धृत है –

(1) रत्नावली (2) माध्यमिककारिका

(3) मध्यमार्थसंग्रह (4) नीलाभ

62. सौत्रान्तिक निर्वाण को मानते हैं –

(1) भावरूप (2) उच्छेदरूप (3) उभयरूप (4) अनुभयरूप

63. भगवान् बुद्ध ने नैरात्म्य को माना था –

(1) किसी शाश्वत सत्ता का प्रतिषेध और अहङ्कार ममकार की वृत्ति का निरास

(2) उच्छेदवाद

(3) शाश्वतवाद

(4) सभी धर्मों का निषेध

64. माध्यमिक मत में सत्यों की सङ्ख्या है –

(1) चार 04 (2) तीन 03 (3) दो 02 (4) एक 01

collegedunia
India's largest Student Review Platform

65. शून्यता है –

(1) धर्मों की निःस्वभावता (2) पदार्थों का उच्छेद

(3) पदार्थों का अभाव (4) शाश्वतवाद का प्रतिषेध

66. माध्यमिक मत में निर्वाण है –

(1) भावरूप (2) अभावरूप (3) उभयरूप (4) उभयप्रतिषेधरूप

67. माध्यमिक मत में जगत् है –

(1) भावरूप (2) अभावरूप (3) उभयरूप (4) निःस्वभाव

68. योगाचार मत में जगत् है –

(1) अभावरूप (2) भावरूप (3) उभयरूप (4) अनुभय

69. विज्ञानवादी सत्य को व्यवस्थापित करता है –

(1) त्रिधा (2) द्वेधा (3) एकधा (4) अनेकधा

70. योगाचार मत में तत्व है –

(1) परिनिष्पन्नलक्षण (2) शाश्वतरूप (3) क्लेशाभावरूप (4) उभयात्मक

71. वैभाषिक मत में निर्वाण का पर्याय है –

(1) प्रतिसंख्यानिरोध (2) अप्रतिसङ्ख्यानिरोध

(3) अविज्ञप्ति (4) अनावृति

72. योगाचार मत में निर्वाण है –

(1) विमलविज्ञानधातु (2) निरूपाधिशेष

(3) सोपाधिशेष (4) इनमें से कोई नहीं

collegedunia
India's largest Student Review Platform

73. न सन्नासन्न सदसन्न चाप्यनुभयात्मकम् ।

चतुष्कोटिविनिर्मुक्तं तत्त्वं माध्यमिका विदुः ।।

यह श्लोक निम्नलिखित ग्रन्थ से उद्धृत हुआ है –

(1) ज्ञानसारसमुच्चय (2) माध्यमिककारिका

(3) अदयवज्र सङ्ग्रह (4) मध्यमार्थसङ्ग्रह

74. आर्यदेव की रचना है –

(1) चतु:शतक (2) मध्यमकशास्त्र

(3) मध्यमार्थसङ्ग्रह (4) मध्यमकहृदयकारिका

75. चतु:तकवृत्ति के पुनरुद्धारकर्त्ता हैं –

(1) आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य (2) सुनीति कुमार पाठक

(3) उमाशङ्कर व्यास (4) प्रह्लाद प्रधान

76. चतु:शतकवृत्ति के रचयिता हैं –

(1) भावविवेक (2) बुद्धपालित (3) चन्द्रकीर्ति (4) बोधिरुचि

77. अभिधर्मामृत के रचयिता हैं –

(1) घोषक (2) कात्यायनीपुत्र (3) अनिरुद्ध (4) बुद्धघोष

78. बुद्धघोष की रचना है –

(1) विसुद्धिमग्गो (2) अभिधम्मत्थसङ्गहो

(3) अभिधम्मावतारो (4) मिलिन्दपञ्हो

collegedunia
India's largest Student Review Platform

79. ज्ञानप्रस्थानशास्त्र के लेखक हैं –

(1) कात्यायनीपुत्र (2) अश्वघोष (3) रत्नकीर्ति (4) अनिरुद्ध

80. ये श्लोक इस ग्रन्थ से उद्धृत है –

दीपो यथा निर्वृतिमभ्युपेतो

नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम् ।

दिशं न काञ्चिद् विदिशं न काञ्चित् ।

स्नेहक्षयात् केवलमेति शान्तिम् ।।

कृती तथा निर्वृतिमभ्युपेतो

नैवावनिं गच्छति नान्तरिक्षम् ।

दिशं न काञ्चिद् विदिशं न काञ्चित्

क्लेशक्षयात् केवल मेति शान्तिम् ।।

(1) बुद्धचरित (2) शारिपुत्र प्रकरण

(3) सौन्दरनन्द (4) वर्णनार्हस्तोत्र

81. परिकल्पितलक्षण सत्य के अन्तर्गत आते हैं –

(1) सभी स्वप्न, अलौकिक एवं अध्यस्तभावस्थित धर्म

(2) सभी प्रतीत्यसमुत्पन्न धर्म

(3) सभी लौकिक धर्म

(4) परमार्थ तत्त्व

82. परतन्त्रलक्षण सत्य के अन्तर्गत आते हैं –

(1) अलौकिक, स्वाप्न एवं मनसा परिकल्पित धर्म

(2) लौकिक एवं हेतु प्रत्यय समुत्पन्न धर्म

(3) परमार्थ तत्त्व

(4) इनमें से कोई नहीं

collegedunia
India's largest Student Review Platform

83. बुद्धचरित के रचयिता हैं –

(1) महाकवि अश्वघोष
(2) महाकवि कालिदास
(3) प्रवरसेन
(4) नागार्जुन

84. सौन्दरनन्द के नायक हैं –

(1) सुन्दर
(2) नन्द
(3) देवदत्त
(4) बुद्ध

85. अद्वयवज्रसङ्ग्रह के रचयिता हैं –

(1) अद्वयवज्र
(2) सरहपाद
(3) विनयतोष भट्टाचार्य
(4) लुई-पा

86. सरहपाद की रचना है –

(1) दोहाकोशगीति
(2) विमलप्रभा
(3) तत्त्वरत्नावली
(4) वाराहीगीतिका

87. मन्त्रण तन्त्र न ध्येय न धारण
सब्बहि रे बड़ बिब्भस कारण ।
यह उक्ति इनकी रचना है –

(1) कम्बलाम्बरपाद
(2) सरहपाद
(3) लुई-पा
(4) जालन्धरी-पा

88. कम्बलपाद की रचना है -

(1) तत्त्वमुक्तावली
(2) हेवज्रसाधन
(3) सेकोद्देशटीका
(4) हेरुकसाधन (निधान) पञ्जिका (साधन निधि नाम)

collegedunia
India's largest Student Review Platform

89. सेकोद्देशटीका के रचयिता हैं –

(1) पुण्डरीक (2) सरहपाद (3) लुईपाद (4) नडपाद

90. मञ्जुश्रीमूलकल्प के आद्य सम्पादक हैं –

(1) म. म. टी. गणपति शास्त्री (2) म. म. हर प्रसाद शास्त्री

(3) डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र (4) डॉ. प्रबोध चन्द्र बागची

91. सूत्रसमुच्चय के रचयिता हैं –

(1) असङ्ग (2) मैत्रेनाथ (3) ज्ञानश्रीमित्र (4) नागार्जुन

92. बोधिचार्यावतारपञ्जिका के लेखक हैं–

(1) प्रज्ञाकरमति (2) शान्तिदेव (3) कमलशील (4) चन्द्रकीर्ति

93. तत्त्वरत्नावली इनकी रचना है –

(1) अद्वयवज्र (2) लक्ष्मीङ्करा (3) आर्यदेव (4) नागार्जुन

94. साधनमाला के सम्पादक हैं –

(1) हर प्रसाद शास्त्री (2) विधुशेखर भट्टाचार्य

(3) विनयतोष भट्टाचार्य (4) आचार्य नरेन्द्र देव

95. आचार्य नरेन्द्र देव की रचना है –

(1) बौद्धधर्मदर्शन (2) बौद्धसंस्कृति (3) बौद्धदर्शनमीमांसा (4) बुद्धचर्या

collegedunia
India's largest Student Review Platform

96. बौद्धा सिद्धों की सङ्ख्या है –

(1) पचहत्तर 75 (2) अस्सी 80 (3) बयासी 82 (4) चौरासी 84

97. मिलिन्दपञ्हो के हिन्दी अनुवादक हैं –

(1) भिक्षु जगदीश काश्यप (2) भदन्त आनन्द कौसल्यायन

(3) आचार्य नरेन्द्र देव (4) आचार्य बलदेव उपाध्याय

98. जातक के हिन्दी अनुवादक हैं –

(1) भिक्षु जगदीश काश्यप (2) भदन्त आनन्द कौसल्यायन

(3) आचार्य बलदेव उपाध्याय (4) आचार्य बटुकनाथ खिस्ते

99. पुरातत्त्वनिबन्धावली ग्रन्थ के लेखक हैं –

(1) महापण्डित राहुल सांकृत्यायन (2) भिक्षु जगदीश काश्यप

(3) भदन्त आनन्द कौसल्यायन (4) पण्डित परशुराम चतुर्वेदी

100. ललितविस्तर है –

(1) भगवान् बुद्ध की प्रथम उपलब्ध जीवनी जो लोकोत्तरवादी महासङ्घिक परम्परा में प्रचलित थी

(2) आदि बौद्ध महाकाव्य

(3) एक पश्चात्कालीन महायान सूत्र

(4) अश्वघोष द्वारा प्रणीत एक चम्पूकाव्य

collegedunia
India's largest Student Review Platform

101. निर्वाण को सदा उदित एक सर्वोत्कृष्ट सुख (सुखराज) इस ग्रन्थ में कहा गया है –

(1) सेकोद्देश टीका

(2) कालचक्रतन्त्र

(3) विमलप्रभा टीका

(4) हेवज्रतन्त्र

102. सर्वोपलम्भोपशमः प्रपञ्चोपशमः शिवः ।

न क्वचित् कस्यचित् कश्चिद् धर्मो बुद्धेन देशितः ।।

यह कारिका इस ग्रन्थ से उद्धृत है –

(1) महायानसूत्रालङ्कार (2) चतुःशतक

(3) शून्यतासप्तति कारिका (4) माध्यमिक कारिका

103. प्रसन्नपदा मध्यमकवृत्ति के रचयिता हैं –

(1) बुद्धपालित (2) भावविवेक (3) चन्द्रकीर्ति (4) नागार्जुन

104. मध्यमकावतार के रचयिता हैं –

(1) बुद्धपालित (2) नागार्जुन (3) आर्यदेव (4) चन्द्रकीर्ति

105. मध्यमकावतार के संस्कृत भाषा में आंशिक पुनरुद्धारकर्त्ता हैं –

(1) आचार्य विधुशेखर भट्टाचार्य (2) पण्डित अय्यास्वामी शास्त्री

(3) शान्ति भिक्षु शास्त्री (4) आचार्य प्रह्लाद प्रधान

collegedunia
India's largest Student Review Platform

106. चर्यागीतिकोश के पुनरुद्धारकर्त्ता एवं सम्पादक हैं –

(1) प्रबोध चन्द्र बागची, शान्ति भिक्षु (2) हर प्रसाद शास्त्री, चिन्ताहरण
(3) जगन्नाथ उपाध्याय चक्रवर्ती (4) नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

107. चित्त विशुद्धिप्रकरण के रचयिता हैं –

(1) आर्यदेव (2) नागार्जुन (3) चन्द्रकीर्ति (4) भावविवेक

108. अकुतोभया इस ग्रन्थ की टीका है –

(1) महायानसूत्रालङ्कार (2) माध्यमिक कारिका
(3) चतु:शतकं (4) चतु:स्तव

109. आर्यदेव की रचना है –

(1) हस्तबाल प्रकरण (2) माध्यमिक कारिका
(3) चतु:स्तव (4) शून्यतासप्तति कारिका

110. कालचक्रतन्त्र का सम्पादन इन्होंने किया है –

(1) लोकेश चन्द्र, विश्वनाथ बनर्जी (2) रामचन्द्र पाण्डेय
(3) पी. एल. वैद्य (4) हेरम्ब नाथ चट्टोपाध्याय

111. चित्तविशुद्धिप्रकरण का संस्कृत में पुनरुद्धार इन्होंने किया है –

(1) प्रभुभाई भीखा भाई पटेल (2) विधुशेखर भट्टाचार्य
(3) सुनीति कुमार पाठक (4) व्रजवल्लभ द्विवेदी

112. चतु:स्तव का पुनरुद्धार इन्होने किया था –

(1) प्रभुभाई भीखाभाई पटेल (2) अय्यास्वामी शास्त्री
(3) जीसप तुच्ची (4) जगन्नाथ उपाध्याय

collegedunia
India's largest Student Review Platform

113. चतु:स्तव की खण्डित पाण्डुलिपि की खोज और उसका सम्पादन प्रथम बार इन्होंने किया था–

(1) जीसप तुच्ची (2) एम्. विण्टरनित्स

(3) ए. बी. कीथ (4) ए. ए. मैकडॉनेल

114. खण्डित अंश में चतु:रत्तव की टीका का सम्पादन इन्होंने किया है –

(1) जीसप तुच्ची (2) लोकेश चन्द्र

(3) थियोडोर एफ्. श्चेरवात्स्की (4) गोविन्द चन्द्र पाण्डेय

115. माध्यमिक कारिका की अनुपलब्ध तीन वृत्तियों का संस्कृत में पुनरुद्धार और सम्पादन इन्होंने किया है –

(1) रघुनाथ पाण्डेय (2) अय्यास्वामी शास्त्री

(3) विधुशेखर भट्टाचार्य (4) नलिनाक्ष दत्त

116. भारत में बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास ग्रन्थ इनकी रचना है –

(1) डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय (2) पं. बलदेव उपाध्याय

(3) नलिनाक्ष दत्त (4) अनन्त लाल ठाकुर

117. ज्ञानश्रीमित्र निबन्धावली के सम्पादक हैं –

(1) अनन्त लाल ठाकुर (2) सङ्घसेन सिंह

(3) किशोर नाथ झा (4) उमा रमण झा

118. सिंहल में अशोक ने बौद्धधर्म के प्रचारार्थ इन्हें भेजा था –

(1) महेन्द्र, संघमित्रा (2) बिन्दुसार

(3) सुषीम (4) चन्द्रगुप्त

collegedunia
India's largest Student Review Platform

119. अशोक ने बौद्धधर्म के प्रचारार्थ गिरनार में भी शिलाभिलेख खुदवाये थे जिनकी संङ्ख्या है –

(1) सोलह 16 (2) पन्द्रह 15 (3) चौदह 14 (4) तेरह 13

120. मौर्यवंश के इस राजा ने विदेशों में भी धर्मप्रचारार्थ दूत भेजे थे –

(1) बिन्दुसार (2) चन्द्रगुप्त (3) अशोक (4) रामगुप्त

collegedunia
India's largest Student Review Platform

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

collegedunia
India's largest Student Review Platform

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 30 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में ***लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त,*** लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. ***उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।***
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. ***उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।***
6. ***ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।***
7. ***उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।***
8. ***प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।***
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ***ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।***
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त केवल ***ओ एम आर उत्तर-पत्र*** परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।

SEAL

collegedunia
India's largest Student Review Platform